सम्पादकीय

पंजाब की धरती में गुरु परम्परा और पंजाबियत को कोई परास्त नहीं कर सकता

पंजाब में एक बार पुन: शांति को भंग करने के प्रयास जारी हैं। उनकी इच्छा है कि पंजाबियों ने अपने आत्मबल और सामूहिक इच्छा शक्ति से जो शांति अर्जित की है और विदेशी शक्तियों द्वारा प्रायोजित आतंकवाद को पराजित किया है, उसे पुन: आरंभ किया जाए। वे इस सीमा तक चले गए हैं कि उन्होंने अमीर शहीद और शहीदे आजम भगत सिंह की शहादत को भी नकारना शुरू कर दिया है। उनका कहना है कि वे सिखों के शहीद नहीं थे। यही बस नहीं, दशम् गुरू श्री गोबिंद सिंह जी द्वारा रचित वाणी जो श्री दशम् ग्रंथ साहिब में संग्रहीत है, उस पर भी प्रश्नचिन्ह लगाना शुरू कर दिया है। वे पंजाब को विभिन्न संप्रदायों के आधार पर बांटने का प्रयास कर रहे हैं। वे गुरूओं की वाणी को नहीं जानते हैं, न उसके साधक हैं, और न ही उसके भीतरी तत्व के मर्म को पहचानते हैं। वे हृदयवहीन राजनीतिज्ञ है जो पंजाबियों की लाशों पर राजनीति करके सत्ता के शिखरों तक पहुंचना चाहते हैं। इसके लिए वे पाकिस्तान तक से हाथ मिलाने को तत्पर हैं। इसके लिए वे अमेरिका के हाथों में खेलने के लिए तैयार हैं। ये लोग पंजाबियत के दुश्मन हैं। ये लोग गुरूवाणी से दूर है। वे सिख के भीतर छिपे अर्थ को नहीं जानते। वे पंजाब के स्वर्णिम इतिहास से नावाकिफ है। वे अहमद शाह अब्दाली और महमूद गजनवी को भूल जाना चाहते हैं। केवल भूल जाना ही नहीं बल्कि अपने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उनकों महिमा मंडित करने से भी गुरेज नहीं करते। वे सेवापंथियों, निर्मलों, विभिन्न टकसालों में हो रही गुरू शब्द की साधना से दुखी हैं। इसीलिए वे इन सबकों मटियामेट कर देना चाहते हैं।

परन्तु पंजाबियत न इतनी कमजोर है कि इस प्रकार के चंद लोगों के षड्यंत्रों से उसमें दरारें पड़ जाएंगी और न ही उसकी नींव इतनी कमजोर है कि वे इन झंझावातों से उखड़ जाएंगी। आशा की एक यही किरण है कि पंजाब के लोग इन षड्यंत्रकारियों के साथ नहीं हैं। मालवा के लोग इनके विरोधी हैं। माझा के लोग इनके विरोधी है। दोआबा के लोग इनके विरोधी है। चंद लोगों के यह गिरोह इक्का-दुक्का स्थानों पर जोर-जोर से चिल्लाते हैं। उनकी बात पर कोई ध्यान नहीं देता। लेकिन जैसा कि सभी जानते हैं कि जोर से चिल्लाने पर ही खबर बनती है। इसलिए इन इक्का-दुक्का लोगों की न्यूज बन रही है। इस न्यूज से पंजाब के बाहर आम जनता पंजाब के बारे में गलत अवधारणा बना लेती है। पंजाब भारतीय संस्कृति का उद्‌गम स्रोत है। यह तक्षशिला की भूमि है। यह गुरूओं का कर्मक्षेत्र है। यह हरिसिंह नलवा की रणस्थली है। यहां की दीवारों में गुरू पुत्रों का बलिदान अंकित है। पंजाब के लोगों ने उस अकाल पुरूष की साधना की है। अत: पंजाब की यह सनातन परंपरा इन षड्यंत्रकारियों को निश्चित ही परास्त करेगी।

29 फरवरी, 2008 को भारत सरकार ने संसद में बजट पेश करने के साथ साथ बंटवारें की नींव को पक्का करने का काम किया है। अल्पसंख्यक मंत्रालय बनाने के नाम पर मुस्लिम तुष्टीकरण के लिए एक हजार करोड़ रख छोड़े हैं। धर्म के नाम पर निशुल्क छात्रवृत्ति पर 80 करोड़ रुपये, इस्लाम मदरसा विकास हेतु 400 करोड़ रुपये, देश के 90 मुस्लिम बाहुल जिलों के लिए 3780 करोड़ रुपये, मुस्लिम बाहुल क्षेत्रों में बैंकों की विशेष शाखाएं खोलने तथा राष्ट्रीय रक्षा के सजग प्रहरी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बलों में मुसलमानों की विशेष भर्ती करके सरकार न सिर्फ विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के संविधान में निहित पंथनिरपेक्ष मूल मंत्र को नष्ट करना चाहती है। बल्कि देश को एक ओर बंटवारे की ओर ले जाना चाहती है। मदरसों को दिए जाने वाली राशि का उपयोग यदि सरकारी विद्यालयों के जिर्णोद्धार में होता तथा प्रत्येक मुस्लिम बच्चे की अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था होती, तो शायद ये बच्चे भी राष्ट्रीय विकास की धारा में जुड़ते। आतंकवाद के मुख्य स्रोत मदरसों को यह मदद् मूलत: वोट की राजनीति है, जिसका अंत केवल और केवल आतंकवाद है। कांग्रेस का डॉ. ह्यूमवाद विभाजक तत्व है।

- डा. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री